بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**22.04.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

विरोधी मौलवी अहमदियत को मिटाने का प्रयास करते रहे और जमाअत बढ़ती रही। अब भी ये प्रयत्न कर रहे हैं तथा करते रहेंगे परन्तु अल्लाह तआला की यह तक़दीर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि बसल्लम के इस सच्चे ग़ुलाम की जमाअत ने बढ़ना है और बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी, इन्शाअल्लाह।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु एक बार यह विषय बयान फ़रमा रहे थे कि मनुष्य के लिए दो वस्तुओं की सफ़ाई अति आवश्यक है जिनमें से एक सोच एंव चिन्तन है तथा दूसरी सूक्ष्म भावना अर्थात नेकी करने की भावना है। निरन्तर रहने वाली पवित्र भावनाएँ उस समय उत्पन्न होती हैं जब दिल सम्पूर्ण रूप से पवित्र हो तथा विचारों की स्वच्छता अर्थात सोच, धारणा तथा चिन्तन का सदैव पवित्र रहना जिसे अरबी भाषा में तनवीर कहते हैं, मन की शुद्धि से प्राप्त होती है। तनवीर उस बात को कहते हैं कि मनुष्य के भीतर ऐसा नूर पैदा हो जाए कि सदैव सुन्दर विचार पैदा हो। तनवीर इस बात का नाम नहीं है कि प्रयास करके पवित्र विचार पैदा किया जाए अपितु ऐसी क्षमता उत्पन्न हो जाए कि सदैव अच्छे विचार पैदा होते रहें। कभी कोई अनुचित प्रकार के विचार आएँ ही नहीं और ज़ाहिर है ये बातें निरन्तर प्रयास तथा अल्लाह तआला की कृपा से ही पैदा होती हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मैंने स्वयं सुना है। कई बार आपसे जब कोई फ़िक़्ही मसला (इस्लाम के दर्शन शास्त्र से सम्बंधित विषय) पूछा जाता तो क्यूँकि इन समस्याओं के समाधान अधिकांशतः उन्हीं लोगों को याद होते हैं जो हर समय इसी काम में लगे रहते हैं। कई बार आप फ़रमाया करते थे कि जाओ मौलवी नुरुद्दीन साहब से पूछ लो या मौलवी अब्दुल करीम साहब मरहूम का नाम लेते, कि उनसे पूछ लो या मौलवी सय्यद अहसन साहब का नाम लेकर फ़रमाते कि उन से पूछ लो अथवा किसी अन्य मौलवी का नाम लेते और कई बार जब आप देखते कि इस समस्या का समाधान किसी ऐसी बात से सम्बंधित है जहाँ एक अवतरित सुधारक के रूप में आपके लिए दुनया का मार्ग दर्शन करना आवश्यक है तो आप स्वयं उस मसले का समाधान बता देते। परन्तु जब किसी मसले का सम्बंध नवीन सुधारों से न होता तो आप फ़रमा देते कि अमुक मौलवी साहब से पूछ लें और यदि वह मौलवी साहब मज्लिस में ही बैठे हुए होते तो उनसे फ़रमाते कि मौलवी साहब यह मसला किस प्रकार है? परन्तु कई बार ऐसा भी होता कि जब आप कहते अमुक मौलवी साहब से यह मसला पूछ लो तो साथ ही आप यह भी फ़रमाते कि हमारा मन यह कहता है कि इसका समाधान यूँ होना चाहिए और फिर फ़रमाते कि हमने परीक्षण किया है कि इसके बावजूद कि हमें कोई समाधान ज्ञात न हो तो उसके विषय में जो आवाज़ हमारे मन से उठे, बाद में वह मसला उसी रंग में हदीस और सुन्नत से प्रमाणित होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह चीज़ है जो तनवीर कहलाती है। तो तनवीर उस बात को कहते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क में जो विचार भी उत्पन्न हों वे भी शुद्ध हों। जिस प्रकार एक स्वास्थ्य तो वह होता है कि मनुष्य कहे कि मैं इस समय स्वस्थ हूँ तथा एक स्वास्थ्य वह होता है कि मनुष्य भविष्य में भी स्वस्थ रहे। तो तनवीर, चिन्तन का वह सुधार होता है जिसके परिणाम स्वरूप आगे भी जो विचार उत्पन्न हों, शुद्ध ही हों। आप

फ़रमाते हैं कि आध्यात्मिक प्रगति के लिए चिन्तन की तनवीर की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार आध्यात्मिक उन्नति के लिए पवित्रता एंव तक़्वा की आवश्यकता होती है और वास्तविकता यह है कि जो तनवीर का अर्थ मस्तिष्क के सम्बंध में है, वही तक़्वा का अर्थ दिल के सम्बंध में हैं। सामान्यतः लोग नेकी और तक़्वा को एक चीज़ समझते हैं जबकि नेकी वह सद्कर्म है जो हम कर चुके हैं अथवा करने का निश्चय रखते हैं तथा तक़्वा यह है कि मनुष्य के भीतर भविष्य में जो भावनाएँ भी उत्पन्न हों, तो जैसा कि वर्णन हो चुका है, कि सोच विचार और चिन्तन, जिनका मस्तिष्क के साथ सम्बंध है, यह तनवीर है और भावनाओं का सदैव नेकी पर स्थापित रहना तक़्वा है, इसका सम्बंध दिल से है। जब भी किसी इंसान को विचारों की तनवीर तथा दिल का तक़्वा प्राप्त हो जाए तो फिर बुराई के हमले से सुरक्षित रहता है और जब बदी के आक्रमण से सुरक्षित रहे फिर ऐसा इंसान अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के नीचे आ जाता है। जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सामान्य समस्याओं में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ सवाल करने वालों को सिलसिले के अन्य विद्वानों की ओर भेज दिया करते थे परन्तु अनेक सवाल हैं जो प्रत्यक्षतः बहुत छोटे हैं, उनमें सिलसिले के विद्वानों के विचारों की भी आप शुद्धि फ़रमाया करते थे।

इस विषय में क़ाज़ी अमीर हसन साहब बयान फ़रमाते हैं कि मैं आरम्भ में इस बात से संतुष्ट था कि यात्रा में पढ़ी जाने वली क़सर (चार के स्थान पर दो रक्अत फ़र्ज़) नमाज़ सामान्य प्रस्थितियों में उचित नहीं बल्कि केवल युद्ध की अवस्था में, संकट के भय के कारण जायज़ है तथा इस मामले में हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल के साथ बड़ी वार्ता किया करता था। क़ाज़ी साहब फ़रमाते हैं कि जिन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का गुरदासपुर का मुक़दमा था, एक बार मैं भी वहाँ गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ वहाँ मौलवी साहब अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल और मौलवी अब्दुल करीम साहब भी थे परन्तु ज़ोहर की नमाज़ का समय आया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे फ़रमाया कि आप नमाज़ पढ़ाएँ अर्थात क़ाज़ी साहब को कहा। कहते हैं कि मैंने दिल में दृढ़ निश्चय किया कि आज मुझे अवसर मिला है, मैं कसर नहीं करुंगा बल्कि पूरी पढ़ूँगा तो इस समस्या का कुछ निर्णय हो जाएगा। जब पढ़ लूँगा तो आप ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़त्वा फ़रमाएँगे। क़ाज़ी साहब बयान करते हैं कि मैंने यह निश्चय करके अभी हाथ उठाए ही थे, अल्लाहु अकबर कहने के लिए तथा इस नीयत के साथ उठाए थे कि क़सर नहीं करुंगा तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरे पीछे दायीं ओर खड़े थे, आप तुरन्त क़दम बढ़ाकर आगे आए और मेरे कान के पास मुंह करके फ़रमाया। क़ाज़ी साहब! दो ही पढ़ेंगे न? तो मैंने विनय पूर्वक कहा कि हुज़ूर दो ही पढ़ूंगा। क़ाज़ी साहब कहते हैं उस समय से मेरी समस्या का समाधान हो गया तथा मैंने अपनी पूर्व धारणा छोड़ दी।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- इसके अंतर्गत यह भी बता दूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न अवसरों पर फ़िक़्ही मसले (इस्लाम के दर्शन शास्त्र से सम्बंधित विषय) बयान फ़रमाए हुए हैं। यह नहीं कि प्रत्येक समस्या को आप विद्वनों की ओर फेर दिया करते थे, स्वयं भी बयान फ़रमाया करते थे। इन सभी विभिन्न अवसरों पर विभिन्न मज्लिसों में जो आपने फ़िक़्ही मसले बयान फ़रमाए हैं उनको अब नज़ारत-ए-इशाअत पाकिस्तान ने फ़िक़्हुल मसीह के नाम से प्रकाशित किया है। जमाअत के लोगों को भी इन मसलों के समाधान के विषय में यह पुस्तक लेनी चाहिए। इस प्रकार समय समय पर मुझे भी अवसर मिला तो ये मसले बयान करता रहूँगा।

जुम्अः की नमाज़ के साथ यदि असर की नमाज़ जमा की जाए तो फिर जुम्अः की नमाज़ से पहले सुन्नतें पढ़नी चाहिएँ। इस विषय पर स्पष्टीकरण देते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं, एक दोस्त ने यह बयान किया है कि वे एक यात्रा पर मेरे साथ थे। मैंने जुम्अः और असर की नमाज़ एक साथ जमा करके पढ़ाईं तथा जुम्अः से पहले सुन्नतें भी पढ़ीं, ये दोनों बातें ठीक हैं । नमाज़ों के जमा होने की अवस्था में सुन्नतें माफ़ हो जाती हैं, यह बात भी ठीक है क्यूँकि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुम्अः की नमाज़ से पहले जो सुन्नतें हैं, वे पढ़ा करते थे। मैंने वे यात्रा के समय पढ़ी हैं, और पढ़ता हूँ तथा इसका कारण यह है कि जुम्अः की नमाज़ से पहले जो

नफ़लें पढ़ी जाती हैं वे ज़ोहर की नमाज़ की सुन्नतों से भिन्न हैं। उनको वास्तव में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुम्अः की मर्यादा के लिए क़ायम फ़रमाया है। हज़रत मुस्ले मौऊद फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यात्रा के समय जुम्अः पढ़ते भी देखा है, और छोड़ते भी देखा है। और जब यात्रा के समय जुम्अः पढ़ा जाए तो मैं पहली सुन्नतें पढ़ा करता हूँ तथा मेरा विचार यही है कि वे पढ़नी चाहिएँ और यही सामान्य फ़त्वा है क्यूँकि वे सामान्य सुन्नतों से भिन्न हैं तथा जुम्अः के सम्मान के कारण हैं।

मनुष्य के जीवन में ख़ुशी के अवसर व्यक्तिगत भी आते हैं, जमाअत के रूप में भी आते हैं तथा देश के स्तर पर भी आते हैं और ख़ुशी के अवसरों पर उनको प्रकट करना भी होता है परन्तु कुछ लोग इसमें न्यूनाधिकता का शिकार हो जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो इस ज़माने में इस्लाम की शिक्षानुसार संतुलित रास्तों पर चलाने के लिए आए। आपने हमारा प्रत्येक छोटी सी छोटी चीज़ के विषय में भी मार्ग दर्शन फ़रमाया। दीन के विषय में भी, तथा दुनया के विषय में भी। नमाज़ का तो मैं वर्णन कर आया हूँ। अब एक प्रत्यक्ष दुनया की ख़ुशी के अवसर पर किस प्रकार प्रदर्शन होना चाहिए, इस विषय में आप अलैहिस्सलाम ने क्या मार्ग दर्शन फ़रमाया, इसके विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अमल को हमारे सामने रक्खा है, मैं पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से चराग़ाँ (विशेष अवसरों पर रौशनी सजाना) प्रमाणित है। रानी विक्टोरिया की जुब्ली पर चरागाँ किया गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस रंग में जो प्रसन्नता प्रकट की, वह अपने अन्दर एक हिकमत रखती है जैसा कि मोमिन की प्रत्येक बात अपने अन्दर हिकमत रखती है। चरागाँ जब विशेष रूप से बड़े स्तर पर किया जाए तथा प्रत्येक घर में करना अनिवार्य घोषित किया जाए तो उस पर इतना व्यय आ जाता है कि उसकी तुलना में उसका कोई वास्तविक लाभ दिखाई नहीं देता। हाँ! जहाँ उसकी देश स्तरीय अथवा राजनैतिक आवश्यकता हो, जहाँ अधिक प्रकाश की आवश्यकता हो, यदि वहाँ किया जाए तो कोई बुराई नहीं। जैसे कि हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु अन्हु की ओर से मस्जिद में अधिक प्रकाश की व्यवस्था की गई थी। मस्जिद एक ऐसा स्थान है जहाँ अधिक प्रकाश की आवश्यकता है, क्यूँकि लोग वहाँ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं अथवी दीन की पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। अतः यदि हज़रत उमर ने मस्जिद में अधिक प्रकाश की व्यवस्था की तो इसमें हिकमत थी। अन्यथा जहाँ तक हम देखते हैं इस्लाम में ख़ुशियाँ ऐसे रंग में मनाई जाती हैं कि मानव जाति को इसके द्वारा अधिक से अधिक लाभ पहुंच सके। उदाहरणतः ईद है, इसमें क़ुर्बानी करने से ग़रीबों को गोश्त मिलता है। ईदुल फ़ित्र पर फ़ितराने के द्वारा ग़रीबों की सहायता की जाती है। तो इस्लाम में जहाँ भी ख़ुशी मनाने का आदेश दिया है इस बात पर बल दिया है कि उसे ऐसे रंग में मनाया जाए कि देश तथा मानव समाज को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो। परन्तु चरागाँ करने की स्थिति में कोई ऐसा लाभ नहीं होता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चरागाँ कराया तो वह एक राजनैतिक आवश्यकता के कारण था, और इसी प्रकार कई बार आप हमें आतिश बाज़ी भी ले दिया करते थे ताकि बच्चों का दिल प्रसन्न हो और फ़रमाया करते थे कि गन्धक के जलने से कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। केवल बच्चों का दिल ख़ुश करने के लिए नहीं बल्कि आतिश बाज़ी में गन्धक होती है, उसके जलने से वातावरण स्वच्छ होता है। अतः आपने हमें कई बार अनार तथा फुलझड़ियाँ मंगाकर दीं। बच्चे यदि थोड़ा सा मनोरंजन कर लें तो कोई बुराई नहीं, उनकी भावनाओं को बिल्कुल दबाया न जाए। बच्चों में यह भावना भी रहे कि उनकी जो खेल कूद की आयु है, उसमें इस्लाम उनकी उचित भावनाओं को रद्द नहीं करता। उदाहरणतः चरागाँ है, आतिश बाज़ी है, जहाँ देश के सामूहिक उल्लास में ये बातें उन्हें शामिल करती हैं, इनके द्वारा देश से एक प्रकार के प्रेम का भी प्रदर्शन होता है और बच्चों का मनोरंजन भी हो जाता है। अतः अवसर एवं स्थान को दृष्टि में रखते हुए और संतुलन में रहते हुए कोई आयोजन करने में कोई बुराई नहीं। परन्तु बच्चों पर यह बचपन में ही स्पष्ट कर देना चाहिए कि इस्लामी शिक्षा की परिधि तथा देश के संवधिान के भीतर रह कर ही हम ये सारी बातें करते हैं और करेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने बचपन की दो घटनाएँ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार मुलतान तशरीफ़ ले गए। मैं भी आपके साथ था। वापसी पर लाहौर ठहरे। वहाँ उन दिनों मोम से बने हुए चित्र दिखाए जा रहे थे अर्थात मोम के द्वारा चित्र बनाए जाते थे अथवा प्रतिमाएँ बनाई जाती थीं जिनके

द्वारा विभिन्न राजाओं के दरबारों के हालात बताए जाते थे। शेख़ रहमतुल्लाह साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया कि एक ज्ञान वर्धक चीज़ है, आप इसे देखने के लिए तशरीफ़ ले चलें। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन्कार कर दिया। इसके बाद उन्होंने मुझसे आग्रह करना आरम्भ कर दिया कि मैं चलकर वे मोम के पुतले देखूँ। मैं क्यूँकि बच्चा था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पीछे पड़ गया कि मुझे ये प्रतिमाएँ दिखाई जाएँ। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरे अनुरोध पर मुझे अपने साथ ले गए। अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वीकृति भी इसकी प्रदान की, तथा केवल इस लिए ले गए कि बहुत से लोगों ने इनकी प्रशंसा की थी कि एक ज्ञान वर्धन एंव ऐतिहासिक चीज़ है, इसे देखने में कोई बुराई नहीं। केवल बच्चे के आग्रह को देखकर नहीं चले गए थे। यदि आप समझते कि यह एक ऐसी बात है जो इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध है तो चाहे बच्चा आग्रह करता, न जाते। अतः एक ज्ञान वर्धन चीज़ थी इस लिए आप बच्चे को साथ लेकर देखने चले गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि दूसरी घटना जो मुझे याद है, वह यह है कि मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब अथवा उनका कोई बच्चा बीमार था तथा आप उसे देखने के लिए तशरीफ़ ले गए थे। नगर के अन्दर से जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वापस आ रहे थे तो सुनहरी मस्जिद की सीढ़ियों के निकट मैंने लोगों का एक बड़ा समूह देखा जो गालियाँ दे रहा था। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की गाड़ी पास से गुज़री तो समूह को देखकर मैंने समझा कि यह भी कोई मेला है। अतः मैंने देखने के लिए गाड़ी से बाहर अपना सिर निकाला। उस समय की यह घटना आज तक मुझे नहीं भूली कि मैंने देखा कि एक व्यक्ति जिसका हाथ कटा हुआ था तथा जिस पर हल्दी युक्त पट्टियाँ बन्धी हुई थीं, वह बड़े जोश से अपने टुन्डे हाथ को दूसरे हाथ पर मारकर कहता जा रहा था कि मिर्ज़ा दौड़ गया, मिर्ज़ा दौड़ गया।

अब देखो एक व्यक्ति के घाव है, उस पर पट्टियाँ बन्धी हुई हैं परन्तु वह विरोध के जोश में यह समझता है कि मैं अपने टुन्डे हाथ से ही, नऊज़ु बिल्लाह, अहमदियत को नष्ट कर दूँगा अथवा अहमदियत को दफ़न कर आऊँगा। यह कैसी भयानक दुश्मनी है जो लोगों के दिलों में पाई जाती है तथा कैसे कैसे उन्होंने ज़ोर लगाया कि लोग क़ादियान में न आएँ और अहमदियत को क़बूल न करें। ऐसे कई लोग अहमदियों में मौजूद हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में क़ादियान आने के निश्चय से बटाला तक आए परन्तु फिर उनको मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब ने वापस कर दिया। अतः आप फ़रमाते हैं कि मैंने सुना है कि मौलवी अब्दुल माजिद साहब भागलपुरी भी इसी कारण से आरम्भ में अहमदियत क़बूल करने से वंचित रह गए। जब वे बटाला में आए तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने उन्हें बहका कर वापस कर दिया और फिर यही मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का काम रहता था। वे प्रति दिन रेलवे स्टेशन पर पहुंचते और जब कुछ लोग क़ादियान जाने के इरादे से उतरते तो वे उन्हें कहते कि वहाँ जाकर क्या लोगे। वहाँ गए तो ईमान ख़राब हो जाएगा तथा कई लोग उन्हें दीन का विद्वान समझ कर वापस चले जाते और सोचते कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब जो कुछ कह रहे हैं, यह सच ही होगा। तो यह सब कुछ मौलवियों के विरोध के कारण था। उन्होंने लोगों को भी इस हद तक भड़का दिया था कि वह टुन्डा भी नारे लगा रहा था।

इस प्रकार ये मौलवी प्रयत्न करते रहे तथा जमाअत बढ़ती रही। अब भी ये चेष्टा कर रहे हैं तथा करते रहेंगे परन्तु अल्लाह तआला की यह तक़दीर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सच्चे ग़ुलाम की जमाअत ने बढ़ना है और बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी, इन्शाअल्लाह।

अल्लाह तआला हमें भी इसका सामर्थ्य प्रदान करे कि हम अपने अन्दर वह वास्तविक परिवर्तन पैदा करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे चाहते हैं तथा वास्तविक मुसलमानों का नमूना बनें। अपनी धारणाओं तथा सोचों में रौशनी पैदा करें तथा अपने दिलों को भी तक़्वा से भरें।